हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण

युनिट-4

(1) अलंकार की परिभाषा और उदाहरण ।
(अनुप्रास, यमक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अलंकार।)
(2) छंद की परिभाषा और उदाहरण ।
(दोहा, चौपाई, मंदाक्रान्ता, इन्द्रब्रजा)
(3) रस का अर्थ और उसके भेद ।

युनिट-4

प्र.1 छंद की परिभाषा देकर उसके प्रकारों की चर्चा कीजिएः

अक्षरों की संख्या एवम् क्रम, मात्रा, गणना तथा यति गति से संबंध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्य रचना छंद कहलाती है । छंद के मुख्य रूप से दो प्रकार है। (1) वर्णिक छंद (2) मात्रिक छंद।

❖ **चोपाई छंदः** यह मात्रिक छंद है । इसके प्रत्येक चरण में सोलह (16) मात्राएँ होती है । कुल चार चरण होती है । कुल 64 मात्राएँ होती है ।

पंक्तिः

नित, नूतन मंगल उर माही ।
निमिष दिन जामिनी जाही ।।
बड़े भोर सूबर भूपत भनि जागे।
जाचक गुणगन गावन लागे ।।

❖ **दोहा छंदः** यह भी मात्रिक छंद है। इसके प्रथम और तृतीय चरण में 13 (तेरह) और मात्राएँ होती है तथा दूसरे या चौथे चरण में तेरह (13) मात्राएँ होती है । जैसे –

पंक्तिः श्री गुरु चरण सरोज रज
निजमन मुकुल सुधार।
बना रघुवर विमलरस जो
दल फल चार ।

(1) मंदक्रान्ता छंदः इस वार्णिक छंद के प्रत्येक चरण में लगण, भगण, नगण, तगण, जगण दो गुरु के क्रम से सत्रह वर्ण होते हैं । तथा दस-सात वर्ण पर यति होती है । जैसे –

उदाः फूली डाले सूकु सूमु मैई तीय की देख आ जाती है । मुरलीधर को मोहीनी मूर्ति आतो ।

❖ **इन्द्रवज्रा छंदः** इन्द्रवज्रा छंद के प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं। जैसे –

पंक्तिः तारा दिवानी मधु नेह की है ।
जीना सिखाना धुन प्रेम की है।।
बातें सुहानी मुज को सुलाई ।
गाना सुनाएँ मनवा मिलाएँ ।।

प्र.1 अलंकार की परिभाषा देकर उसके प्रकार की चर्चा कीजिएः

जो किसी वस्तु को अलंकृत करे उसे अलंकार कहते हैं । अथवा भाषा को शब्दार्थ से सुसज्जित करे उसे अलंकार कहते हैं ।

❖ अनुप्रास अलंकारः

वर्णों की आवृत्ति बार-बार हो उसको अनुप्रास अलंकार कहते हैं ।

उदा. कहत, नटत, रिजत, खिजत,
मिलत खिलत, लजियात ।।

❖ उत्प्रेक्षा अलंकारः

उपमेय से कल्पित उपमान की संभावना को उत्प्रेक्षा अलंकार कहते हैं ।

उदा. फूले काश सकल मही छाई,
जन बरसा रीतु प्रकट बुढ़ाई।।

❖ यमक अलंकारः

यमक अलंकार उसे कहते हैं जब एक शब्द का दो बार प्रयोग हो और दोनों बार उसके अर्थ बदलते हों उसे यमक अलंकार कहते है । जैसे –

उदा. कनक, कनक ते सो गुनी
मादकता अधिकाय ।
या खाए बौराय नर या पाए
बौराय ।।

❖ उपमा अलंकारः

हिन्दी साहित्य में उपमा अलंकार का प्रयोग विशेष तौर पर होता है । उपमा से तात्पर्य है किसी से किसी का मूल्यांकन करना। उपमा अलंकार उसे कहते हैं जिसके प्रयोग से भाषा में सुंदरता कि वृद्धि होती है। ठीक वैसी ही जैसे किसी नारी की शोभा आभूषण को पहनने से बढ़ती है। जैसे –

उदा. भूषण बीना न सोहई – कविता–
वनीता – मीत ।

प्र.3 रस की परिभाषा देकर उसके प्रकार की चर्चा कीजिएः

भारतीय संस्कृत के आचार्यों ने रस की परिभाषा इस प्रकार से दी है, "विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है ।" रस का शाब्दिक अर्थ होता है – आनंद ।

❖ रस के प्रकारः

(1) रति
(2) शोक
(5) उत्साह
(7) जुगुप्सा
(9) भक्ति

(2) हास्य
(4) क्रोध
(6) भय
(8) विस्मय
(10) वात्सल्य

❖ रसः

रस की परिभाषा और उसके प्रकार

❖ रस की परिभाषाः

आचार्यों ने अर्पन अर्पन ढंग से रस की परिभाषा इस प्रकार से दी है–

विभाव,अनुभाव और व्यभीचारिभाव के संयोग से रस की निश्पत्ति होती है। - भरतमुनी

❖ रस के प्रकारः

(1) शृंगार रस
(2) करुण रस
(3) हास्य रस
(4) रौद्र रस
(5) वीर रस
(6) भयानक रस
(7) विभत्स रस
(8) सद्भूत रस
(9) शांत रस

❖ रस की परिभाषाः

रस का शाब्दिक अर्थ है 'आनंद'। काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती है उसे रस कहा जाता है । श्रव्य काव्य के पठन अथवा श्रवण एवं दृश्य काव्य के दर्शऩ तथा श्रवण में जो अलौकिक आनंद प्राप्त होता है, वही काव्य में रस कहलाता है ।

❖ श्रृंगार रसः

नायक और नायिका के मन में संस्कार रूप में स्थिति रति या प्रेम जब रस की अवस्था को पहुँचकर आस्वाद के योग्य हो जाता है तो वह श्रृंगार रस कहलाता है ।

जैसे – रामही रूप निहारति जानकि कंगन के नग की परछाहीं ।

❖ संयोगः

याते सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही,
पल टारत नाहीं ।

- तुलसीदास

❖ वियोगः

निसिदिन बरसत नयन हमारे
सदा रहति पावस ऋतु हम पै
जब ते स्याम सिधारे ।

- सूरदास

❖ **संयोगः**

बत रस लालच लाल की,
मुरलीधरी लुकाय ।
सौंह करे, भौंहन हँसे,
दन कहैं नटि जाय ।।

❖ **वियोगः**

कागद पर लिखत न बनत,
कहत सँदेशु लगत
कहि है सब तेरौ हियौ
मेरे हियकी बात ।।

❖ **हास्यरसः**

परतियदोष पुरान सुनि
हँस मुलकी सुखदानि ।
कसुकर राखि मिलहू
मुँह आई मुस्कान ।।

❖ **करुणरसः**

कहे जुबचन वियोगिनी,
विरह विकल बेलाई ।
किये न को असुआ
सुआहि बोल सुनाई ।।

❖ संधि (सम+धि) शब्द का अर्थ है मेल । दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर

❖ रौद्ररसः प्रलय करन बरसन लगे,
जुरि जलधर इक साथ ।।

❖ वीररसः किसने कहा काई युद्ध की मेला
शांति से सोओ ।

❖ भयानकरसः

डिगति पानि डिगुलात गिरि,
लाखि सब ब्रज बेहाल ।
कम्पि किशोरी दास कै
खरै लजानेलाल ।।

❖ शांत रसः

मन पछितै ही अवसर बीते
दुरलभ देह पाई हरिपद भुज,
करम वचन भरु हिते।
सहसबाहु दस बदन अदि नृप
बचेन काल बलिते।

❖ अद्भुतरसः

अखिन भुवन चर अचर सब
हरिमुख में लखि मात ।
चकित भई गदगद वचन
विकसित दृग पुलकात ।

❖ बीभत्सः

सिर पै बैठ्यो काश,
आँख दोउ खात निकारत ।
रकीचन जिअहि स्यार
अतिहि आनंद डर धारत ।।

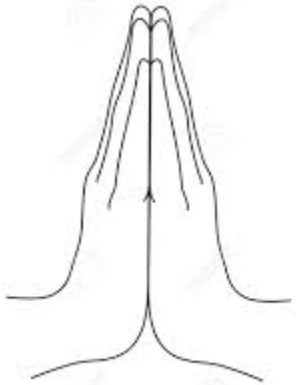

धन्यवाद